UN WATER

यूएन वॉटर रिपोर्ट

यूनाइटेड नेशन्स वर्ल्ड वॉटर डेवलपमैण्ट रिपोर्ट 2015

संवहनीय संसार के लिए पानी

सारांश

UNESCO
United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization

World Water Assessment Programme

WWDR 2015

पानी संवहनीय विकास का केन्द्रीय तत्व है। जल–संसाधन और उन के द्वारा उपलब्ध करवाई जाने वाली सेवाओं की श्रृंखलाए गरीबी उन्मूलन, आर्थिक प्रगति और पर्यावरण की संवहनीयता का आधार हैं। भोजन और ऊर्जा सुरक्षा से लेकर मनुष्यों और पर्यावरण के स्वास्थ्य तक, पानी सामाजिक कल्याण और विस्तृत प्रगति के सुधार में योगदान करते हुए, करोड़ों आजीविकाओं को प्रभावित करता है।

कल्पना 2050: संवहनीय संसार में जल का महत्व

निकट भविष्य में सम्भव हो पाने वाले संवहनीय संसार में, एक मज़बूत अर्थव्यवस्था में, पानी और उस से जुड़े संसाधनों को मनुष्यों के कल्याण और पारिस्थितिकी की समग्रता बनाए रखने के लिए प्रबन्धित किया जाएगा। हर व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त और सुरक्षित पानी उपलब्ध करवाया जाएगा, साथ ही विस्तारित और कुशलतापूर्वक प्रबन्धित संरचनाओं द्वारा विश्वसनीय और किफ़ायती जल–आपूर्ति और स्वच्छता सेवाओं के ज़रिए स्वस्थ जीवन–शैली और व्यवहार बनाए रखे जाएंगे। जल–संसाधन प्रबन्धन, संरचना और सेवा परिदान के लिए संवहनीय वित्त–समर्थन उपलब्ध करवाया जाएगा। पानी सभी रूपों में मूल्यवान है– अपशिष्ट जल भी एक ऐसा संसाधन है जो दोबारा उपयोग के लिए ऊर्जा, पोषक तत्व और मीठा पानी उपलब्ध करवाता है। मानव बस्तियां प्राकृतिक जल स्त्रोतों और उन सहयोगी पारिस्थितिकी के साथ तारतम्य बैठाकर बसती हैं, जिनमें ख़तरे कम करने और पानी से जुड़ी आपदाओं के बाद तेजी से जीवनक्रम वापस लौटने के उपाय सहज रूप से जुड़े हों। जल–संसाधन विकास, प्रबन्धन, उपयोग और मानवाधिकार सम्बन्धी एकीकृत तरीके प्रचलित व्यवहार का मापदण्ड होंगे। पानी का नियन्त्रण व्यवसायिकों और नागरिकों के रूप में स्त्रियों और पुरूषों की भविष्य की सम्भावनाओं के अनुरूप, समर्थ और जानकार संगठनों के मार्गदर्शन में, न्यायपूर्ण और पारदर्शी सांस्थानिक ढांचे के तहत, सहभागितापूर्ण तरीके से होगा।

इवोलोजियोन
चित्रः रहै

असंवहनीय विकास के परिणाम

असंवहनीय विकास के तरीकों और शासन की असफलताओं ने जल–संसाधनों की गुणवत्ता और उपलब्धता पर कुप्रभाव डाला है जिस से सामाजिक और आर्थिक लाभ पैदा कर पाने की उनकी सामर्थ्य घटी है। मीठे पानी की मांग लगातार बढ़ रही है। जब तक मांग और सीमित आपूर्ति के बीच सन्तुलन नहीं बैठाया जाएगा, संसार के सामने जल अभाव का वैश्विक संकट बना ही रहेगा।

जनसंख्यावृद्धि, शहरीकरण, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा नीतियां, व्यापार के वैश्वीकरण जैसी वृहद्–आर्थिक प्रक्रियाएं, बदलते आहार और बढ़ते उपभोग पानी की वैश्विक मांग पर काफी हद तक प्रभाव डालती हैं। 2050 तक पानी की वैश्विक मांग के 55 प्रतिशत तक बढ़ जाने के अनुमान हैं। मांग में यह वृद्धि प्रमुख रूप से उत्पादन, ताप–विद्युत उत्पादन और घरेलू उपयोग के क्षेत्रों में बढ़ती मांग के कारण होगी।

किसी संसाधन के लिए प्रतिद्वन्द्वी मांगें, निर्धारण सम्बन्धी फैसले ले पाने को कठिन बनाती हैं और दीर्घकालिक विकास के लिए बेहद आवश्यक क्षेत्रों –खासतौर पर खाद्य उत्पादन और ऊर्जा–के विस्तार को सीमित करती हैं। पानी के लिए प्रतिद्वन्द्विता –पानी के 'उपयोग' और पानी के 'उपयोगकर्ताओं' के बीच– स्थानीय स्तर पर होने वाले संघर्षों का ख़तरा बढ़ाती है और सेवाओं की पहुंच में असमानता पैदा करती है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और समृद्धि पर भारी दुष्प्रभाव पड़ता है।

भूजल का हद से ज़्यादा दोहन अक्सर ही प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और अभिशासन के पुराने तौर–तरीकों का परिणाम होता है। इन तौर–तरीकों में आर्थिक प्रगति के लिए संसाधनों का उपयोग बिना पर्याप्त मानदण्डों और उचित नियन्त्रण के किया जाता है। भूजल की उपलब्धता कम होती जा रही है, अनुमान है कि संसार के 20 प्रतिशत भूजल–आगारों का हद से ज़्यादा दोहन हो रहा है। बेलगाम शहरीकरण, खेती की गलत रिवायतों, वनों के कटने और प्रदूषण जैसे अनेक कारकों से; पारिस्थितिकीय सेवाएं उपलब्ध करवाने की पर्यावरण की क्षमता कम होती जा रही है। इन पारिस्थितिकीय सेवाओं में साफ़ पानी भी शामिल है।

लगातार बनी रहने वाली गरीबी, पानी की आपूर्ति और स्वच्छता सेवाओं तक असमतापूर्ण पहुंच, अपर्याप्त वित्त व्यवस्था, जल–संसाधनों की स्थिति–उपयोग और प्रबन्धन के बारे में कम जानकारी, जल–संसाधन प्रबन्धन और संवहनीय विकास के उद्देश्यों को प्राप्त कर पाने में सहायक होने की उस की क्षमता पर और अधिक बोझ डालते हैं।

जल और संवहनीय विकास के तीन आयाम

संवहनीय विकास के तीन आयामों –सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय– में से हर एक प्रगति, सीमित और अक्सर ही संवेदनशील जल संसाधनों और सेवाएं और लाभ उपलब्ध करवाने के लिए इन्हें प्रबन्धित करने के तरीकों द्वारा तैयार की गई सीमाओं द्वारा नियत होती है।

गरीबी और सामाजिक समता

जहां घरेलू जल आपूर्ति किसी परिवार के स्वास्थ्य और सामाजिक सम्मान के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, वहीं खेती और परिवार द्वारा चलाए जा रहे व्यवसायों जैसे उत्पादक उपयोगों के लिए भी पानी तक पहुंच महत्वपूर्ण है क्योंकि तभी आजीविका, आय पैदा करने और आर्थिक उत्पादकता में योगदान कर पाने के अवसर तैयार हो पाते हैं। बेहतर जल प्रबन्धन और सेवाओं में निवेश, गरीबी उन्मूलन और आर्थिक प्रगति को संवहनीय बनाने में मदद कर सकते हैं। गरीबी और गरीबों की ओर उन्मुख जल सम्बन्धी हस्तक्षेप गरीबी उन्मूलन और आर्थिक प्रगति को स्थायी बनाए रखने में मदद कर सकते हैं। ऐसे हस्तक्षेप उन अरबों गरीबों के जीवनों में बदलाव ला सकते हैंए जिन्हें बेहतर स्वास्थ्य, घटी हुई स्वास्थ्य लागतों, बढ़ी उत्पादकता और समय की बचत से जल और स्वच्छता सेवाओं से प्रत्यक्ष लाभ मिलते हैं।
आर्थिक प्रगति अपनेआप में, व्यापक सामाजिक उन्नति निश्चित नहीं करती। ज़्यादातर देशों में, गरीबों और अमीरों के बीच, नए अवसरों का दोहन करने वालों और दोहन न कर पाने वालों के बीच, एक चौड़ी खाई है जो बढ़ती ही जा रही है। पीने के सुरक्षित पानी और स्वच्छता तक पहुंच एक मानवाधिकार है, लेकिन संसार भर में इस की सीमित प्राप्ति का दुष्प्रभाव अक्सर गरीबों, और विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों पर बहुत अधिक पड़ता है।

आर्थिक विकास

पानी भोजन, ऊर्जा और उत्पादन सहित अधिकांश किस्म की वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में एक परम आवश्यक संसाधन है। अगर पानी की आपूर्ति (गुणवत्ता और मात्रा), उपयोगकर्ता को जहां उस की ज़रूरत है वहां पर विश्वस्त होगी, तभी यह आर्थिक गतिविधियों में वित्तीय रूप से संवहनीय विकास में सहायक बन पाएगी। निर्मित और मानव संसाधन संरचनाओं में पर्याप्त रूप से वित्तपोषित, संचालित और रखरखाव किए गए बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश, अर्थव्यवस्था के कई उत्पादक क्षेत्रों में उन्नति के लिए ज़रूरी ढांचागत बदलावों को सरल बना देते हैं। इसका परिणाम होता है– स्वास्थ्य और शिक्षा में व्यय बढ़ाने से आय के बेहतर अवसर तैयार होना, जिससे आर्थिक विकास की स्वपोषित अनवरत गतिशीलता मज़बूत होती है।

अनुपचारित घरेलू और अपशिष्ट औद्यौगिक जल के प्रदूषण और खेतों से बहे पानी से पारिस्थितिकी तन्त्रों की जल उपलब्ध करवाने की क्षमता कम होती है।

पश्चिम कालिमनतान (इण्डोनेशिया) की सेन्तारम झील संसार के सबसे अधिक विविधतापूर्ण दलदली पारिस्थितिकी तन्त्रों में से एक है। फ़ोटोः रमादियान बख्तियार/सीआइएफ़ओआर

पानी उपलब्ध करवाने, पानी की उत्पादकता और पानी के कुशलतापूर्ण उपयोग के क्षेत्रों में उपलब्ध सर्वोत्तम तकनीको और प्रबन्धन प्रणालियों को प्रोत्साहन देकर, उनके उपयोग को सरल बनाकर और पानी के निर्धारण की व्यवस्थाओं में सुधार करके कई लाभ पाए जा सकते हैं। इस तरह के हस्तक्षेप और निवेश पानी के उपयोग में निरन्तर होती बढ़ोतरी और उन अत्यन्त महत्वपूर्ण पर्यावरण सम्बन्धी पूंजी के संरक्षण की ज़रूरत के बीच सामन्जस्य स्थापित करते हैं जिन पर पानी उपलब्ध करवाना और अर्थव्यवस्था निर्भर हैं।

पर्यावरणीय सुरक्षा और पारिस्थितिकी तन्त्र सेवाएं

ज़्यादातर आर्थिक मॉडल मीठे पानी के पारिस्थितिकी तन्त्रों द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही आवश्यक सेवाओं का मूल्य नहीं समझते जिसका परिणाम अक्सर जल संसाधनों का असंवहनीय उपयोग और पारिस्थितिकी तन्त्रों का ह्रास होता है। अनुपचारित घरेलू और अपशिष्ट औद्यौगिक जल के प्रदूषण और खेतों से बहे पानी से भी जल उपलब्ध करवाने की पारिस्थितिकी तन्त्रों की क्षमता कम हो जाती है।

संसार भर में पारिस्थितिकी तन्त्र, खासतौर पर आर्द्र प्रदेश, कम हो रहे हैं। आर्थिक और संसाधन प्रबन्धन के ज़्यादातर मौजूदा तरीकों में पारिस्थितिकी तन्त्र सेवाओं का मूल्य अब भी कम करके आंका जाता है, उन्हें कम श्रेय दिया जाता है और उन की क्षमता का पूरा उपयोग नहीं होता। पानी और निर्मित और प्राकृतिक संरचनाओं के बीच एक लाभकारी सन्तुलन बनाए रखने वाले विकास के लिए, पारिस्थितिकी तन्त्रों पर अधिक समग्र रूप से ध्यान देना अधिकतम लाभ सुनिश्चित करेगा।

आर्थिक तर्क, पारिस्थितिकी तन्त्रों के संरक्षण को निर्णय लेने वालों और योजनाकारों के लिए अर्थपूर्ण बना सकता है। पारिस्थितिकी तन्त्रों का मूल्यांकन दिखाता है कि पारिस्थितिकी तन्त्रों के संरक्षण से होने वाले लाभ, उस में आने वाली लागत से कहीं ज़्यादा हैं। मूल्यांकन पारिस्थितिकी तन्त्र के संरक्षण में लेन–देन के आकलन में भी महत्वपूर्ण है और इन्हें विकास योजनाओं के लिए बेहतर जानकारी प्राप्त करने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। 'पारिस्थितिकी तन्त्र–आधारित प्रबन्धन' अपनाया जाना दीर्घकालीन जल संवहनीयता सुनिश्चित करने की कुंजी है।

अत्यन्त महत्वपूर्ण विकास चुनौतियों के समाधान में पानी की भूमिका

जल और संवहनीय विकास की अन्तर्सम्बद्धताएं उसके सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय आयामों से आगे तक जाती हैं। मानवीय स्वास्थ्य, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, शहरीकरण और औद्यौगिक प्रगति, और जलवायु परिवर्तन चुनौतियों के वे अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जहां पानी के माध्यम से संवहनीय विकास की केन्द्रीय नीतियों और कार्यवाहियों को मज़बूत (या कमज़ोर) बनाया जा सकता है।

जल आपूर्ति, साफ़सफ़ाई और स्वच्छता (वॉश) की कमी, स्वास्थ्य और समृद्धि पर गहरा प्रभाव डालती है और वित्तीय स्तर पर इसकी भारी मोल चुकाना पड़ता है जिस में आर्थिक गतिविधि की काफ़ी हानि शामिल है। जल आपूर्ति, साफ़सफ़ाई और स्वच्छता (वॉश) तक सभी की पहुंच प्राप्त करने के लिए सुविधावंचित समूहों में प्रगति को तेज करने और जल आपूर्ति, साफ़सफ़ाई और स्वच्छता (वॉश) सेवाएं उपलब्ध करवाने में भेदभाव न होना सुनिश्चित किए जाने की ज़रूरत है। जल और साफ़सफ़ाई सेवाओं में निवेश से ठोस आर्थिक लाभ होते हैं; विकसित क्षेत्रों में इन सेवाओं पर लगाए गए हर डॉलर से मिले लाभों का मूल्य 5 अमेरिकी डॉलर से 28 अमेरिकी डॉलर तक आंका गया है। सभी के लिए जल आपूर्ति, साफ़सफ़ाई और स्वच्छता (वॉश) सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए पांच वर्ष की अवधि में, अनुमानित रूप से 53 अरब अमेरिकी डॉलर प्रतिवर्ष की ज़रूरत होगी। यह एक छोटी रकम है–2010 के सकल घरेलू उत्पाद का कुल 0.1 प्रतिशत!

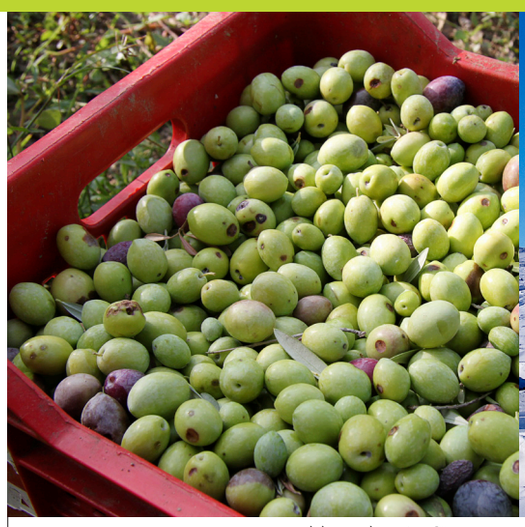

ताज़ा तोड़े गए जैतून (इटली)
फ़ोटोः रिचर्ड आलावे

भूतापीय धुंआघर (आइसलैण्ड)
फ़ोटोः लिडर स्कुलासन

अस्ताना (कज़ाख़स्तान) में नया निर्माण
फ़ोटोः शयानर जेत्पिसोवा/वर्ल्डबैंक

शहरी क्षेत्रों में पानी और साफ़सफ़ाई से वंचित लोगों की संख्या में वृद्धि सीधे तौर पर विकासशील संसार में तेजी से बढ़ रही मलिन बस्तियों और इन समुदायों को पानी और साफ़सफ़ाई की सुविधाएं उपलब्ध करवाने में स्थानीय और राष्ट्रीय शासनों की असमर्थता (या अनिच्छा) से जुड़ी है। संसारभर में मलिन बस्तियों में रहने वाली जनता, जिसकी संख्या 2020 तक 90 करोड़ हो जाने की अपेक्षा है, जलवायु के चरम उतार–चढ़ावों के कारण होने वाली घटनाओं के प्रभावों के प्रति भी बहुत प्रवण है। हालांकि यह एकदम सम्भव है कि शहरी जल आपूर्ति प्रणाली का सुधार भी हो और ग़रीबों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए, प्रणाली का विस्तार भी किया जा सके।

2050 तक, कृषि क्षेत्र को खाद्य उत्पादन में वैश्विक स्तर पर 60 प्रतिशत और विकासशील देशों में 100 प्रतिशत वृद्धि करने की ज़रूरत होगी। क्योंकि वैश्विक कृषि जल मांग की मौजूदा दरें असंवहनीय हैं, इस क्षेत्र को पानी की हानि को कम करते हुए पानी के उपयोग की कुशलता बढ़ानी होगी, और उस से भी महत्वपूर्ण बात यह है कि पानी के उपयोग के अनुपात में फ़सलों की उत्पादकता बढ़ानी होगी। खेती से जुड़ा जल प्रदूषण अधिक सघन खेती से और बढ़ सकता है, लेकिन इसे अधिक कड़े नियमों, नियमों को लागू करवाने और सही लोगों को ही मिलने वाली छूटों जैसे अनेक उपायों के माध्यम से कम किया जा सकता है।

ऊर्जा उत्पादन आमतौर पर पानी के भारी उपयोग पर आधारित है। ऊर्जा के लिए लगातार बढ़ती मांगों को पूरा करने से मीठे पानी के संसाधनों पर निरन्तर दबाव बढ़ेगा, जिस के परिणामस्वरूप कृषि और उद्योग जैसे बाकी उपयोगकर्ता प्रभावित होंगे। क्योंकि इन क्षेत्रों को भी ऊर्जा की ज़रूरत होती है, इसलिए इन के बीच आपसी तालमेल की गुंजायश बनती है क्योंकि यह साथ–साथ विकसित होते हैं। संवहनीय जल भविष्य प्राप्त कर पाने में, ऊर्जा संयन्त्रों की ठण्डा करने की प्रणाली की कुशलता बढ़ाने और पवन ऊर्जा, सौर और भूतापीय ऊर्जा की सामर्थ्य बढ़ाना एक प्रमुख निर्धारक होगा।

उत्पादन उद्योग के लिए पानी की वैश्विक मांग के सन् 2000 से सन् 2050 तक 400 प्रतिशत बढ़ जाने की अपेक्षा है। यह दर सभी क्षेत्रों से अधिक है, इस में से अधिकांश मांग उभरती अर्थव्यवस्थाओं और विकासशील देशों में बनेगी। बहुत से बड़े निगमों ने अपने और अपने आपूर्तिकर्ताओं द्वारा पानी के उपयोग के मूल्यांकन और उसे घटाने में काफ़ी प्रगति की है। छोटे और मझोले आकार के उद्यमों को भी कुछ छोटे पैमाने पर, पानी से जुड़ी ऐसी ही चुनौतियों का सामना करना होता है लेकिन उनके पास इन से निपटने के लिए कम साधन और कम योग्यता है।

मीठे पानी की प्रणालियों पर जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभाव सम्भवतः इन प्रणालियों के लाभों की तुलना में बहुत अधिक होंगे। मौजूदा तथ्य दिखाते हैं कि ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ने पर जल संसाधनों के सामयिक और स्थानिक वितरण में बेहद महत्वपूर्ण बदलाव और पानी से जुड़ी आपदाओं की बारम्बारता और तीव्रता बढ़ते हैं। नए आंकड़ा स्त्रोतों का दोहन, बेहतर मॉडल और आंकड़ा विश्लेषण की बेहतर विधियां, और साथ ही अनुकूलनशील प्रबन्धन नीतियों का अभिकल्पन बदलती और अनिश्चित स्थितियों की प्रभावी अनुक्रिया में सहायक हो सकते हैं।

क्षेत्रीय परिदृष्य

पानी और संवहनीय विकास के अन्तरापृष्ठ पर लंबे समय तक टिकने वाले सुधारों की चुनौतियाँ हर क्षेत्र में अलग– अलग होती हैं।

संसाधनों के उपयोग में कुशलता बढ़ाना, अपशिष्ट और प्रदूषण में कमी करना, उपभोग के प्रतिमानों को प्रभावित करना और सही प्रोद्यौगिकियों का चुनाव करना, यूरोप और उत्तरी अमेरिका के सामने खड़ी मुख्य चुनौतियाँ हैं। नदी–घाटी स्तर पर पानी के विभिन्न तरह के इस्तेमालों के बीच तालमेल बैठाना और राष्ट्रीय स्तर पर और सीमाओं के आर–पार भी नीतिगत सामंजस्य में सुधार, आने वाले कई बरसों में प्राथमिकताएं रहेंगी ।

पिसाक, कस्को (पेरू) में पॅटेटो पार्क से गुज़रते लोग
फ़ोटोः मैनॅन कोनिंगस्टाइन

एशिया और प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में संवहनीयता, सुरक्षित जल और स्वच्छता तक पहुंच विभिन्न इस्तेमालों के लिए पानी की माँग की पूर्ति और उस से जुड़े प्रदूषण के भार को कम करने; भूजल प्रबन्धन में सुधार; और पानी से संबंधित तबाहियों से उबर पाने में होने वाली प्रगति से जुड़ी है।

अरब क्षेत्र में टिकाऊ विकास की राह में आने वाली जल संबंधी चुनौतियों में से पानी की कमी प्रमुख है। इस क्षेत्र में सतह पर मिलने वाले पानी और भूजल का असंवहनीय उपयोग और उसका अत्यधिक दोहन पानी की कमी को बढ़ाता है और दीर्घकालिक विकास के लिए खतरा बनता है । पानी की आपूर्ति बढ़ाने के लिए वर्षा जल संग्रह, अपशिष्ट पानी को दोबारा इस्तेमाल करना, सौर ऊर्जा के उपयोग से खारे पानी को मीठा बनाना जैसे विकल्प अपनाए जा रहे हैं।

लैटिन अमेरिका और कैरिबियन क्षेत्र में जल संसाधनों के प्रबन्धन के लिए औपचारिक सांस्थानिक क्षमता तैयार करना और जल संसाधनों के संवहनीय प्रबन्धन और उपयोग को सामाजिक–आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन से जोड़ना एक प्रमुख प्राथमिकता है। एक और प्राथमिकता 2015 के बाद की विकास कार्यसूची के सन्दर्भ में पानी और स्वच्छता के मानवाधिकार की पूरी तरह प्राप्ति सुनिश्चित करना है।

अफ़्रीका के लिए आधारभूत लक्ष्य है विकास की राह में कुछ अन्य क्षेत्रों के नकारात्मक अनुभवों को दोहराए बिना, अपने प्राकृतिक और मानव संसाधन को विकसित करते हुए वैश्विक अर्थव्यवस्था में संवहनीय और जीवन्त सहभागिता प्राप्त करना। फिलहाल अफ़्रीका के सम्भाव्य जल–संसाधनों का कुल 5 प्रतिशत विकसित है और औसत प्रति व्यक्ति भंडारण 200 क्यूबिक मीटर है (उत्तरी अमेरिका में यह 6,000 क्यूबिक मीटर है)। अफ़्रीका की खेती की ज़मीन का कुल 5 प्रतिशत सिंचित है और इसकी जलविद्युत सम्भाव्यता के 10 प्रतिशत से भी कम अंश का उपयोग विद्युत उत्पादन के लिए होता है।

कार्यान्वयन के साधन और अनुक्रियाएं

2015 के बाद के लिए विकास कार्यसूची

सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य वैश्विक गरीबी को कम करने के लिए सामाजिक, निजी और राजनीतिक समर्थन जुटाने में सफल रहे। पानी के सम्बन्ध में सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य, पीने के पानी की आपूर्ति और स्वच्छता तक पहुंच में सुधार के लिए अधिक प्रयास करने में सहायक रहे हैं। फिर भी, सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों का अनुभव बताता है कि 2015 के बाद के लिए विकास कार्यसूची में, जल आपूर्ति और स्वच्छता के प्रश्नों से परे, पानी के लिए खास संदर्भ में बने एक अधिक व्यापक और विस्तृत ढांचे की मांग ज़रूरी है।

2014 में, यूएन–वॉटर ने पानी के लिए एक प्रतिबद्ध संवहनीय विकास लक्ष्य की सिफ़ारिश की जिसमें पाँच लक्ष्य क्षेत्र हैं: (1) जल आपूर्ति, साफ़सफ़ाई और स्वच्छता (वॉश) (2) जल संसाधन (3) जल अभिशासन (4) पानी की गुणवत्ता और अपशिष्ट पानी का प्रबन्धन और (5) पानी से सम्बन्धित आपदाएं। ऐसा केन्द्रित जल लक्ष्य इतने सामाजिक, आर्थिक, वित्तीय और अन्य लाभ पैदा करेगा जो इसकी लागत से कहीं अधिक होंगे। यह लाभ स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और खाद्य उत्पादन, ऊर्जा, उद्योग और अन्य सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के विकास में सहायक होंगे।

सान्त्वना पुरस्कार ''निर्मल भारत फ़ोटो प्रतियोगिता''
फ़ोटोः दिनेश चन्द्रा

पानी से सम्बन्धित अभिशासन में प्रगति, विभिन्न स्तरों और निकायों के बीच फैली निर्णय लेने की प्रक्रिया को समझने वाले समावेशी अभिशासन ढांचों के माध्यम से सामाजिक घटकों की बड़ी श्रृंखला को जोड़ने की मांग करती है।

"हमारी चाहत का भविष्य" की प्राप्ति

संवहनीय विकास पर 2012 की यूएन कॉन्फ्रेंस (रियो+20) के निष्कर्ष दस्तावेज 'द फ़्यूचर वी वॉण्ट' ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि 'पानी संवहनीय विकास के केन्द्र में है लेकिन सच यह भी है कि विकास और आर्थिक प्रगति, संसाधनों पर दबाव बनाते हैं और मनुष्यों और प्रकृति के लिए पानी की सुरक्षा को चुनौती देते हैं। वहीं आहार, ऊर्जा, और अन्य मानवीय उपयोगों से जुड़ी मांगों को पूरा करने और पारिस्थितिकी तन्त्र को बनाए रखने के लिए ज़रूरी पानी की मात्रा के बारे में भारी अनिश्चितता बनी रहती है। जलवायु परिवर्तन का सम्प्रभाव इन अनिश्चितताओं को बढ़ा देता है।

पानी का प्रबन्धन, सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में विभिन्न निर्णय लेने वालों का उत्तरदायित्व है। मुद्दा यह है कि ऐसी साझी ज़िम्मेदारियों को ऐसा रचनात्मक कैसे बनाया जाए जिस पर विभिन्न हितधारक एकजुट हों और सामूहिक रूप से सहभागिता करते हुए सुविचारित और पूरी जानकारी के साथ निर्णय लें।

अभिशासन

पानी से सम्बन्धित अभिशासन में प्रगति, विभिन्न स्तरों और निकायों के बीच फैली निर्णय लेने की प्रक्रिया को समझने वाले समावेशी अभिशासन ढांचों के माध्यम से, सामाजिक घटकों की बड़ी श्रृंखला को जोड़ने की मांग करती है। उदाहरण के लिए, स्थानीय स्तर पर पानी के प्रबन्धन में महिलाओं के योगदान और पानी से सम्बन्धित निर्णय लेने में उनकी भूमिका को स्वीकार करना बेहद ज़रूरी है।

जहां बहुत से देश जल प्रबन्धन सुधार में हो रही देरी से जूझ रहे हैं, वहीं दूसरे देशों ने विकेन्द्रित प्रबन्धन और नदी घाटी संगठन बनाने सहित समेकित जल संसाधन प्रबन्धन के विभिन्न पक्षों को लागू करने में बहुत प्रगति की है। समेकित जल संसाधन प्रबन्धन का कार्यान्वयन क्योंकि अक्सर आर्थिक स्तर पर कुशलता को ध्यान में रखते हुए किया जाता रहा है, इसलिए समता और पर्यावरणीय संवहनीयता के मुद्दों पर और ज़्यादा ज़ोर देने और सामाजिक, प्रशासकीय और राजनीतिक जवाबदेही को मजबूत करने के तरीके अपनाने की ज़रुरत है।

जोखिमों को कम से कम और लाभों को ज़्यादा से ज़्यादा करना

जल संसाधन प्रबन्धन, सेवाएं उपलब्ध करवाना और संरचना के सभी पक्षों (विकास, प्रचालन और रखरखाव) की पड़ताल महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक लाभ पैदा कर सकती है। पीने के पानी की आपूर्ति और साफ़सफ़ाई पर खर्च, केवल स्वास्थ्य के क्षेत्र में होने वाले लाभों के आधार पर ही पूरी तरह लागत वसूल कर लेने वाला निवेश है। आपदा से निपटने की तैयारियों, पानी की गुणवत्ता में सुधार और अपशिष्ट पानी के प्रबन्धन में निवेश भी अपनी लागत से कहीं अधिक लाभ देते हैं। लागत और लाभ का हितधारकों के बीच वितरण, वित्तीय औचित्य के लिए बेहद आवश्यक है।

प्राकृतिक जोखिम, विशेष रूप से आर्थिक और सामाजिक स्तरों पर सबसे ज़्यादा विध्वंसकारी पानी सम्बन्धित आपदाएं, जलवायु परिवर्तन के कारण सम्भवतः बढ़ती जाएंगी। योजना, तत्परता और समन्वित अनुक्रियाएं – बाढ़ क्षेत्र प्रबंधन, पूर्व चेतावनी व्यवस्थाएं और जोखिम के प्रति अधिक जन–जागरुकता सहित – समुदायों की प्रत्यास्थता को सुधारते हैं। बाढ़ प्रबन्धन के ढाँचागत और गैर–ढाँचागत तरीकों का समन्वय विशेष रूप से अपनी पूरी लागत वसूल कर लेने में सक्षम हैं।

जल आपूर्ति, साफ़ सफ़ाई और स्वच्छता (वॉश) तक सभी की पहुंच हो, इसके लिए सुविधावंचित समूहों में प्रगति तेज करने और बिना भेदभाव जल आपूर्ति, साफ़ सफ़ाई और स्वच्छता (वॉश) सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने की ज़रूरत है।

बच्चे सही ढंग से हाथ धोने और सुरक्षित पानी पीने का महत्व सीख रहे हैं। आड एन प्राथमिक विद्यालय (लाओस) फ़ोटोः बार्ट वर्वे/वर्ल्ड बैंक

जोखिम और पानी से सम्बन्धित विभिन्न सुरक्षा मुद्दे भी तकनीकी और सामाजिक तरीकों से कम किये जा सकते हैं। साफ़ किए गए गए अपशिष्ट पानी का खेती में, बगीचों और मैदानों की सिंचाई के लिए; औद्योगिक संयन्त्रों की ठण्डा करने की प्रणालियों में, और कुछ मामलों में पीने के पानी में सुरक्षित तरीके से मिलाए जाने आदि विभिन्न उपयोगों के उदाहरण बढ़ते ही जा रहे हैं।

पानी की आधुनिक माँगों की पूर्ति के लिए पानी के स्त्रोतों के मौजूदा आकलन ज़्यादातर अपर्याप्त हैं। आकलन, सुविचारित निवेश और प्रबन्धन निर्णय के लिए ज़रुरी हैं। यह कई क्षेत्रों के बीच तालमेल बनाकर निर्णय लेने को सरल बनाते हैं और हितधारक समूहों के बीच समझौतों और लेन–देन का समाधान करते हैं।

सामाजिक समता

सामाजिक समता संवहनीय विकास के उन आयामों में से एक है जिन पर विकास और जल नीतियों में अपर्याप्त रुप से ध्यान दिया गया है। संवहनीय विकास और मानवाधिकार परिप्रेक्ष्य, दोनों ही अ–समता में कमी लाने और जल आपूर्ति, साफ़सफ़ाई और स्वच्छता (वॉश) तक पहुंच में असमानताओं से निपटने की मांग करते हैं।

इस के लिए निवेश प्राथमिकताओं और परिचालन प्रकियाओं को इस तरह रखे जाने की ज़रूरत है जिस से समाज में सेवाओं का प्रावधान और पानी का निर्धारण अधिक समतापूर्ण हो। गरीब–पक्षधर मूल्य निर्धारण नीतियां, लागतों को कम से कम रखते हुए यह सुनिश्चित करती है कि पानी का मूल्य उस स्तर पर रहे जिस से जल–प्रणाली के रखरखाव और सम्भावित विस्तार में सहायता मिल सके।

पानी का मूल्य निर्धारण भी सुनिश्चित करता है कि –आर्थिक मायनों में या अन्य प्रकार के लाभों में– अपर्याप्त जल संसाधनों को उचित और आदर्श उपयोग के लिए कैसे बाँटा जाए। समतापूर्ण मूल्य निर्धारण और जल अनुज्ञाओं को पर्याप्त रूप से सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उपयोग में लाए हुए पानी को छोड़ा जाना ऐसे तरीकों से दक्ष संचालन और पर्यावरणीय संवहनीयता में मदद करे जो उद्योग और बड़े पैमाने पर सिंचाई की योग्यताओं और ज़रुरतों के साथ ही छोटे पैमाने पर और जीवनयापन के स्तरों पर भी खेती की गतिविधियों के अनुकूल बनाए गए हों।

किसी भी तकनीकी संस्तुति से बढ़ कर, शायद समता का मूल सिद्धान्त ही सभी के लिए, पानी की दृष्टि से अधिक सुरक्षित संसार का वादा करता है।

हम इटली और अम्ब्रिया क्षेत्र की सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई गई वित्तीय सहायता के लिए कृतज्ञ हैं।

Regione Umbria

डब्ल्यूडब्ल्यू ए पी/रिचर्ड कॉनर और अन्गिन कॉन्कागफ
यह पुस्तिका यूएन वॉटर के लिए डब्ल्यूडब्ल्यू ए पी ने तैयार की

यूनाइटेड नेशन्स वर्ल्ड वॉटर असेसमैण्ट प्रोग्राम
प्रोग्राम ऑफ़िस फॉर ग्लोबल वॉटर असेसमैण्ट
डिविज़न ऑफ़ वॉटर साइन्सेज़, यूनेस्को
06134 कॉलॅम्बेला, पेरूजिया, इटली
Email: wwap@unesco.org
http://www.unesco.org/water/wwap

मुखपृष्ठ पर फोटोः परम्परागत जाल का उपयोग करते स्थानीय मछुआरे। सितुगुनुन्ग, सुकाबरनू, पश्चिमी जावा (इण्डोनेशिया) फोटोः रिकी मार्टिन/ सीआइएफओआर

© UNESCO 2015